रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के0 पी0 सिटी –67/2024–26

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निषपक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 48 ● अंक – 13 ● कानपुर 1 से 15 जुलाई 2026 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹ 100

विश्व योग दिवस एवं विजय दिवस धुम–धाम से सम्पन्न

यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता चाहते हैं तो कड़े निर्णय लेने होंगे

कानपुर–सबसे पहले विश्व योग दिवस के अवसर पर विजय दिवस कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने योगाभ्यास किया डा0 इदरीसी ने कहा यह योगाभ्यास हमें निरन्तर सुचारु रुप से प्रति दिन करना चाहिये, प्रति दिन योग करने से हमारा मन प्रफुल्लित, मस्तिष्क शान्त एवं शरीर स्वस्थ रहता है।

21 जून, 2011 को जो विजय हमने प्राप्त की है उसकी लय बनाये रखनी होगी तभी अभीष्ट की प्राप्ति होगी 21 जून, 2011 की विजय कोई अप्रत्याशित नहीं थी इसके पीछे बहुत परिश्रम करना पड़ा है बहुत से साथियों के सहयोग और समर्थन के द्वारा ही यह विजयश्री हासिल हुई है इसलिए इस विजय को आगे बढ़ाना हम सबका दायित्व है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में रोज़ नये–नये परिवर्तन होते रहते हैं यह परिवर्तन अगर सकारात्मक हों तो पद्धति के विकास में सहायक होते हैं और जब यह परिवर्तन नकारात्मकता का स्वरूप ले लेते हैं तो पद्धति के विकास को अवरूद्ध करने लगते हैं इधर कुछ वर्षों में मूलभूत परिवर्तन हुआ है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्था संचालन करने वाले लोगों की मानसिकता में मूलभूत परिवर्तन आया है और तो और इसका परिणाम यह हो गया है जो वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में लगे थे (उन्होंने अपनी हार स्वीकार कर ली है) और वह अब नाम बदल कर सामने आ रहे हैं।

बहुत सारे ऐसे लोग हैं जिनमें निराशा इस कदर घर कर गयी है कि काम तो करना चाहते हैं लेकिन सही दिशा पकड़ नहीं पा रहे हैं, एक दूसरे के अधिकारों पर अतिक्रमण तक सीमित रहें तो ठीक है अब तो लोग बलात अतिक्रमण करने लगे हैं, जीवन पर्यन्त इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ाव रखने के कारण न तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को छोड़ रहे हैं और न ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी से मोह भंग हो पा रहा है।

जब हम इस विषय पर विचार करते हैं कि जब इन्हें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य नहीं करना है तो फिर इस पद्धति को अपने असफ़ल प्रयासों से दूषित क्यों कर रहे हैं ? सोचने के बाद मन में यही उत्तर आता है कि शायद जो साख उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कमायी है उसको छोड़ना भी नहीं चाहते और भुना तो पा ही नही रहे हैं, इन्हीं सम विषम परिस्थितियों के कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी उस स्थान को नहीं प्राप्त कर पा रही है जो उसे प्राप्त कर लेना चाहिये, जब हम सब इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय अधिकार दिलाने के लिए सरकार से लड़ते थे तब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चरम पर थी।

आज जब केन्द्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन के लिए सारे अधिकार दे दिये गये हैं तब भी हम विकास की राह पर बढ़ नहीं पा रहे हैं, यह एक ऐसा यक्ष प्रश्न है जिस पर यदि शीघ्र उत्तर नहीं पाया गया तो शायद इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उस विकास का सपना जो हम सब लोगों ने देख रखा है शायद आसानी से सम्भव न हो सके, इन्हीं सब विषयों पर गम्भीरता से चिन्तन के लिए व भविष्य की ठोस रणनीति तैयार करने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया द्वारा 21 जून, 2026 को कानपुर में विकासोन्मुखी चिन्तन शिविर का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम की अध्यक्षता एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 मो0 हाशिम इदरीसी ने की।

कार्यक्रम में उपस्थित चिन्तकों ने अपने–अपने विचार रखे इस बैठक का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि हर विचार सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए ही थे, विभिन्न पहलू पर चर्चा होने के बाद सामूहिक रूप से जो निचोड़ आया उस पर निर्णय लेते हुए माननीय अध्यक्ष जी ने तय किया कि यदि वास्तव में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को विकास के रास्ते पर ले चलना है तो हमें कुछ कड़े निर्णय लेने पड़ेंगे, यह निर्णय किसी व्यक्ति विशेष या संस्था के लिए न होकर सामूहिक हैं क्योंकि अब समय आ गया है कि निजी हितों से ऊपर उठकर सिर्फ़ चिकित्सा पद्धति के लिए कार्य किया जाये इसके मूल में यह है कि जब कोई चिकित्सा पद्धति पुष्पित–पल्लवित होती है तो उससे जुड़ा हर व्यक्ति स्वतः समृद्धिशाली हो जाता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और सम्भावनायें भी असीम हैं इन सम्भावनाओं से परिणाम निकालना हमारा अपना कार्य है ऐसे व्यक्ति जो स्वार्थ से लिप्त होकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अन्य पद्धतियों के साथ जोड़कर विकास यात्रा में शामिल होना चाहते हैं उनके स्वप्न कभी पूरे होते नहीं दिखते क्योंकि हर चिकित्सा पद्धति को अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी पड़ती है।

कुछ वर्षों से योग और नेचुरोपैथी की चकाचौंध से हमारे कुछ

शेष पेज 2 पर

- ✓ संघर्ष क्षमता में आ गयी है कमी
- ✓ क्या अकेले ही चलना पड़ेगा
- ✓ राज्य सरकारों का भी ध्यानाकर्षण किया जाना पड़ेंगा
- ✓ सीनियर्स की बदल गयी है सोच
- ✓ आयुष के नाम पर चल रही दुकानों पर विचार किया जाना चाहिये

चिन्ता नहीं करें आवश्यकता है चिन्तन की

प्रसिद्ध हिन्दी कवि और गीतकार रामअवतार त्यागी ने ठीक ही कहा है आदमी सोच तो ले उसका इरादा क्या है !

लक्ष्य की पहचानः–जब कोई व्यक्ति शान्ति से विचार करता है (सोचता है) कि असल में उसका मकसद या इरादा क्या है तो उसे जीवन का सही रास्ता मिल जाता है।

असीम क्षमताः– इस पंक्ति का भाव यह है कि मानव और उसकी इच्छा शक्ति इतनी प्रबल है कि यदि वह सही दिशा में प्रयास करे तो सबकुछ सम्भव है।

मनुष्य के जीवन में चिन्तायें आती और जाती रहती हैं या दूसरे शब्दों में कहा जाये कि जीवन के महत्वपूर्ण घटनाओं में चिन्तित होना भी एक घटना है, चूंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ा हुआ हर व्यक्ति भी मानव की श्रेणी में आता है इसलिए उनका चिन्तित होना स्वाभाविक ही है, लेकिन यह कटु सत्य भी है कि चिन्ता से किसी समस्या का समाधान नहीं होता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिन्ताओं के विविध स्वरूप हैं, चिकित्सक चिन्तित है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कोर्स तो कर लिया प्रैक्टिस में कोई परेशानी तो नहीं होगी! इलेक्ट्रो होम्योपैथी का रजिस्ट्रेशन है कहीं कोई अड़चन तो नहीं होगी, पंजीयन की प्रेरणा देने वाले इसलिए चिन्तित हैं कि चिकित्सक पंजीयन का आवेदन नहीं कर रहा है, कालेज चलाने वाले चिन्तित हैं कि उनके यहाँ प्रवेश नहीं हो रहे हैं, शीर्ष संस्थायें अपने अस्तित्व के लिए चिन्तित हैं, शीर्ष संस्थाओं से जुड़े कर्मचारी अपने भविष्य को लेकर चिन्तित हैं, कार्यालय के कार्यकर्ता अपनी टेबल को लेकर चिन्तित हैं, इस तरह देखा जाये तो हर व्यक्ति चिन्ता ग्रस्त ही दिखता है, मगर मूल प्रश्न यह है कि क्या इन चिन्ताओं से कुछ हासिल होना है ? जब चिन्ताओं से कुछ मिलना नहीं तो चिन्ता क्यों करें ! सफलता पाने के लिए चिन्ता का स्थान चिन्तन को मिलना चाहिये, चिन्तित व्यक्ति कभी भी सकारात्मक सोच के साथ कार्य कर ही नहीं सकता और जहाँ नकारात्मकता पहले ही हावी है वहां से किसी भी अच्छे परिणाम की आशा करना व्यर्थ है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज जिस स्थिति में है वह एक स्पष्ट चिन्तन की आवश्यकता महसूस करती है क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भविष्य आज भी स्पष्ट है, बस ज़रूरत है तो एक ऐसी नीति निर्धारण करने की जिसपर चलकर भविष्य की रूपरेखा तय की जा सके, यदि हम आज की स्थिति पर दृष्टिपात करते हैं क्या खोया और क्या पाया के दृष्टिकोंण से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का मूल्यांकन करते हैं तो पाने का पलड़ा ज्यादा भारी है, हम लगातार पा ही तो रहे हैं, पाने का सिलसिला 25–11–2003 से जो शुरू हुआ था वह आज भी यथावत है, 5–5–2010, 21 जून, 2011, 04 जनवरी, 2012, 02 सितम्बर, 2013 व 14 मार्च, 2016 और अभी–अभी 17 अप्रैल, 2026 को निदेशक(चिकित्सा उपचार) लखनऊ द्वारा जारी पत्र यह सारी तिथियां हमें कुछ न कुछ दे ही रही हैं और इतना दे रही हैं कि जिनका हम उपयोग सही ढंग से नहीं कर पा रहे हैं, सबकुछ पा कर कुछ भी न पाने जैसा प्रदर्शन करना इस बात को स्पष्ट करता है कि हमारे आत्मबल में इतनी कमी आ गयी है कि सामने रखे गेंद को भी पत्थर समझ कर बच कर निकलने का प्रयास करते हैं और फिर शुरू होता है चिन्तित होने का अन्तहीन सिलसिला और यदि यह सिलसिला ऐसे ही चलता रहा तो जो कुछ पाया है या तो काल के गाल में समा जायेगा या फिर इसका लाभ वही उठा पायेंगे जिनकी दृष्टि दूरदर्शी होगी, इसलिए चिन्ताओं के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कोई स्थान नहीं होना चाहिये और जो चिन्तित व्यक्ति हैं उन्हें चिन्तन शिविर में जाकर आत्म चिन्तन करना चाहिये कि भविष्य का निर्धारण उन्हें कैसे करना है ! उदर पोषण की भावना से ऊपर उठकर एक वैभवशाली जीवन की कल्पना करते हुए कार्य करें क्योंकि जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं होता है।

जब इरादा पक्का होता है तो चिन्तायें उनकी राह में रोड़ा नहीं अटकाती हैं, इस बात में कोई दोराय नही है कि आज की बाज़ारवादी संस्कृति ने परिभाषायें व मूल्य बदल कर रख दिये हैं मंज़िल के स्थान पर बाज़ार नज़र आते हैं लेकिन ऐसे व्यक्ति चिन्ताओं से परे होते हैं इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हर व्यक्ति का यह दृष्टिकोंण होना चाहिये कि जीवन के पथ पर चिन्तित रहते हुए प्रगति नहीं पायी जा सकती है,जो व्यक्ति चिन्तित हैं या तो उनकी चिन्ता दूर करने का प्रयास करना चाहिये या फिर उनसे किनारा कर लेना चाहिये चूंकि हमें अभी ज़िन्दा रहना है और ज़िन्दगी का सफ़र बहुत लम्बा है, चिन्ता के बारे में यह उक्ति है कि उज्जवल भविष्य की कामना के साथ सुखद जीवन की कल्पना लिये हुए भविष्य की सुन्दर लालसा के साथ सिर्फ़ कार्य करें चिन्ताओं को स्थान न दें।

विश्व योग दिवस एवं विजल दिवस ....पेज 1 से आगे

साथी इस कदर प्रभावित हैं कि वे इलेक्ट्रो होम्योपैथी को इसके साथ घालमेल करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आवरण पहने रहना चाहते हैं यह कितना तर्क संगत है ? यह तो वही जान सकते हैं।

आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी से काम करने की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है कहीं पर कोई रूकावट या असहजता जैसी बात नहीं है फिर भी तालमेल की जगह घालमेल का काम जारी है सबसे संकट पैदा करने वाली बात औषधि निर्माण के क्षेत्र से आने वाली है जो आज पूरे भारत में सैकड़ों की संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि निर्माणशालायें जन्म ले चुकी हैं और हर औषधि निर्माता गुणवत्ता युक्त औषधि निर्माण का दावा कर रहा है, हम उनके दावे को खारिज नहीं करते हैं, लेकिन यदि कभी कोई परीक्षण हो जाये तो वह परीक्षण की हर कसौटी पर खरा उतरे, पहले कागजी सत्यापन होते थे अब भौतिक सत्यापन का समय है इसलिए अगर किसी निर्माणशाला का भौतिक सत्यापन किसी सक्षम अधिकारी द्वारा किया जाये तो निर्माण शाला संचालक अपनी निर्माण प्रक्रिया और अधिकारों के बारे में अधिकारी को बता कर संतुष्ट कर दे थोड़ी बहुत कमी है तो उसके लिए समय मिल सकता है लेकिन जहां कुछ भी नहीं है और उस विषय पर गलत प्रचार किया जाये तो यह विषय कभी भी उचित नहीं ठहराया जायेगा।

आजकल कुछ कम्पनियां लाइसेंस शुदा दवा बना रही हैं अब आप इन दवा निर्माताओं से पूछिये कि आप को किस प्राधिकारी ने निर्माण का लाइसेंस प्रदान कर रखा है ? क्योंकि जिस संगठन को भारत सरकार ने अधिकृत कर रखा है उस संगठन द्वारा अभी तक किसी भी औषधि निर्माता को औषधि निर्माण का प्रमाण पत्र नहीं दिया गया है जिन लोगों के पास किसी तरह का लाइसेंस है वह लाइसेंस खाद्य एवं औषधि प्रशासन प्राधिकरण द्वारा प्राप्त किये गये है इस तरह के प्राप्त लाइसेंसो से इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों का निर्माण कैसे सम्भव है ? इसका उत्तर वही निर्माता दे सकते हैं जो इस तरह के शब्दों का प्रयोग करते हैं, अब ऐसी बातें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में कभी सहायक होंगी या ये प्रश्न ही बने रहेंगे ? हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि ज्यों–ज्यों विकास होता है त्यों–त्यों उसे कसौटी पर कसा जाता है आज की सरकार स्वास्थ्य के प्रति ज़्यादा सजग है और औषधि के क्षेत्र में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाये हुए है यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधि निर्माणशालाओं/ प्रयोग शालाओं का भी सरकारी निरीक्षण हो जाता है तो उस वक्त यदि हमारी औषधियां वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरी नहीं उतरी तो क्या होगा ?

इन सारे गम्भीर विषयों पर चिन्तन के बाद अध्यक्ष द्वारा यह निर्णय लिया गया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए भारत सरकार स्वास्थ्य मन्त्रालय का 21 जून, 2011 का आदेश काफी है यह आदेश स्पष्ट अधिकार प्रदान करता है और इस आदेश से यह भी स्पष्ट है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जो भी कार्य होंगे वे 25 नवम्बर, 2003 में वर्णित निर्देशों के अनुसार ही किये जायेंगे और सभी राज्य सरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को यह स्पष्ट आदेश भी है कि इस आदेश को हर राज्य अपने यहां लागू करे इस तरह से पूरे देश में 21 जून, 2011 के अनुसार कार्य किया जा सकता है, जो लोग इसके विरूद्ध कार्य करते हैं वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कभी भी सहायक नहीं सिद्ध हो सकते इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने यह निर्णय लिया है कि सभी राज्य सरकारों को 21 जून, 2011 की प्रति प्रेषित कर उनसे निवेदन किया जायेगा कि हर राज्य सरकारें अपने राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में कार्य कर रही संस्थाओं के कार्यों की समीक्षा करे और जो संस्था 21 जून, 2011 के अनुरूप कार्य कर रही हों सरकार उन्हें अपना सहयोग व समर्थन प्रदान करे, जहाँ एक संस्था विधि सम्मत ढंग से और निर्देशों का पालन करते हुए कार्य कर रही है वहीं अन्य संस्थायें मन माने ढंग से कार्य कर रही हैं ऐसी स्थिति में कार्यों का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता है इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि जो संस्थायें वास्तविक कार्य कर रही हों वह बिना किसी गठजोड़ के अकेले ही कार्य करें क्योंकि सफलता पाने के लिए दो चार लोगों की राय की आवश्यकता नहीं होती, व्यक्ति अकेले ही कार्य करते हुए परिणामों को प्राप्त कर सकता है, परिणाम हमें हर हाल में पाने हैं इसके लिए हम हर रचनात्मक कार्य करने से पीछे नहीं हटेंगे निराशा और भय के लिए अब कोई स्थान नहीं है और न ही रास्ता दुर्गम है, जब सब कुछ स्पष्ट और साफ–साफ है तो कार्य करने में हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये, हम अभी प्रयास करेंगे कि हमारे जो नौजवान और बुज़ुर्ग साथी किसी कारण वश दिशा भ्रमित हो गये हैं वह वास्तविकता से परिचित हों और जिस ऊर्जा के साथ पूर्व में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य कर रहे थे उसी ऊर्जा को एक बार फिर से संक्षिप्त करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में अपना योगदान देंगे हम इंतजार करेंगे कि पूरी निष्ठा के साथ लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ें।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती शाहीना इदरीसी ने संगठन के स्थापना से लेकर आज तक किये गये कार्यों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया साथ ही साथ अपेक्षा भी की कि जिन साथियों का हमें प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग मिला है वह आगे भी मिलता रहेगा, श्रीमती शाहीना इदरीसी ने कहा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आज की स्थिति पर हमें गर्व है और इस स्थिति तक पहुँचने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन का जो योगदान है वह कभी भूलाया नहीं जा सकता, कठिन परिस्थितियों से निकल कर आज हम बहुत अच्छी स्थिति में है और आगे सुन्दर स्थिति की ओर बढ़ रहे है।

अन्त में डा0 एम0एच0 इदरीसी द्वारा कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गयी।

विजय दिवस मनाने के समाचार प्रदेश के अनेक जनपदों से प्राप्त हो रहे हैं जिसमें प्रमुख रुप से बलीदपुर, मऊ से डा0 अयाज़ अहमद, हमीरपुर में श्री नरेन्द्र भूषण निगम, रायबरेली में डा0 पी0 एन0 कुशवाहा, लखीमपुर से डा0 आर0 के0 शर्मा द्वारा विजय एवं योग दिवस मानये जाने की सूचनायें प्राप्त हुई है, सम्बंधित समाचार पेज 3 पर देखें।

विजय दिवस के अवसर पर श्रीमती शाहीना इदरीसी विशेष कार्याधिकारी बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के मुख्यालय में अपने विचार व्यक्त करते हुये मंच पर बैठे हुये बोर्ड के चेयरमैन डा0 एन0 एच0 इदरीसी छाया गज़ट

विजय दिवस कार्यक्रम प्रदेश के अन्य ज़िलों में भी आयोजित किये गये

रायबरेली– इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया का 16वां विजय दिवस की पूर्व संध्या पर छजलापुर में धूमधाम से मनाया गया, उक्त अवसर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के सदस्य एवं आशीष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक एसोसिएशन इंस्टीट्यूट के प्राचार्य डॉ पी0 एन0 कुशवाहा ने कहा कि भारत सरकार एवं स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय ने 25 नवम्बर 2003 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए आदेश किया था जिसमें कहा कि पूर्णकालिक स्नातक/स्नातकोत्तर की डिग्री संचालित नही की जा सकती तथा इस पद्धति से प्रैक्टिस करने वाले डॉ शब्द का प्रयोग नही कर सकते है, इस आदश से भ्रम पैदा हुआ लेकिन भारत सरकार ने 5 मई 2010 को स्पश्टीकरण दिया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर कोई प्रतिबन्ध नही है, इसके बाद प्रशिक्षित इलेक्ट्रो होम्योपैथिक

आशीष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीटयूट के प्रमुख डा0 पी0 एन0 कुशवाहा विजय दिवस के अवसर प्रेस से वार्ता करते हुये।

चिकित्सकों का शासकीय अधिकार की कामना 21 जून 2011 में हुयी तब भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के पक्ष में आदेश जारी कर देश के सभी राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों को अनुपालनार्थ प्रशित किया जिसमें इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा, शिक्षा, अनुसंधान एवं विकास का मार्ग सुलभ हो गया तभी से प्रतिवर्ष हम विजय दिवस के रूप में मनाते है, इस अवसर पर उपप्राचार्य/जिला प्रभारी रायबरेली डॉ रमेश द्विवेदी, त्रिलोक सिंह, सुनील कुमार लालता, रामपाल, रामआसरे, रामलखन, जमुना प्रसाद, रामसजीवन, काली □ंकर, सत्यपाल वर्मा, राजेन्द्र सिंह,रिंकू साहू, सालिकराम, भोभनाथ, पारसनाथ, मनोज सिंह आदि चिकित्सक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता माकपा जिला सचिव रामदीन विश्वकर्मा ने की और संचालन त्रिलोक सिंह ने किया।

लखीमपुर– मां सरजू देवी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इंस्टीट्यूट लखीमपुर खीरी में धूम– धाम से मनाया गया योग दिवस डॉ0 राकेश भार्मा, डॉ0 संजीता भार्मा, डॉ0 मंजीत कुमार, डॉ0 अर्चना विश्वकर्मा, डॉ0 अमित विश्वकर्मा, डॉ0 सौम्या भार्मा, डा0 उत्कर्श भार्मा, छात्र चिकित्सक हर्श भार्मा, डा0 किरण गुप्ता, डॉ0 प्रतीक्षा बाजपेई समाजसेवी श्री सूरज गुप्ता, उबैतुल्ला खान और शिक्षक निखलेश मिश्रा सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

वलीदपुर मऊ– इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के पक्ष में जारी आदेश के सालग्रह के अवसर पर नगर पंचायत वलीदपुर स्थित इलेक्ट्रो होम्योपैथिक स्टडी सेन्टर पर विजय दिवस समारोह मनाया गया, सेन्टर संचालक डॉ अयाज अहमद ने उपस्थित लोगों को बताया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया, इलेक्ट्रो होम्योपैथी की रिसर्च एवं विकास हेतु कार्य करता है।

21 जून 2011का आदेश जो भारत सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ हेल्थ एण्ड फेमली वेलफेयर हेल्थ रिसर्च विभाग ने जारी किया था। इसी संस्था की कोशिशों का नतीजा था इस आदेश को सभी राज्य सरकारों को कार्यवाही हेतु भेजा गया था इस आदेश के अनुसार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास, रिसर्च एवं शिक्षा पर कोई रोक नही है। जब तक कोई नया आदेश जारी नही हो जाता तब तक इसी आदेश के अनुसार इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कार्य आगे बढ़ता रहेगा, इस आदेश को उत्तर प्रदेश भाासन चिकित्सा अनुभाग–6 ने 4 जनवरी 2012 को जारी कर समस्त अपर निदेशकों को एवं मुख्य चिकित्साधिकारियों को इसके कियान्वयन हेतु कहा था इस अवसर पर डॉ अयाज अहमद, डॉ निसार अहमद, मोहम्मद आसिफ एवं जमील अहमद आदि उपस्थित रहे।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0

8–लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ–226001
website: www.behmup.org.in Email: registrarbehmup@gmail.com

प्रबन्ध समिति 2026–2029

मनोनीत सदस्य

E.H. Dr. पूरण चन्द्र शर्मा शास्त्री
देवबन्द, सहारनपुर

51 YEARS of Service to NATION

एडवोकेट– अमित सिंह
हाईकोर्ट– लखनऊ बेन्च

51 YEARS of Service to NATION

मुहम्मद खालिद
समाज सेवी

← शिक्षक सदस्य →

E.H. Dr. राकेश शर्मा

E.H. Dr. प्रताप नारायण कुशवाहा

चिकित्सक सदस्य

E.H. Dr. परित्राण राय घूसिया

51 S of Service 'ATION

E.H. Dr. प्रिन्स श्रीवास्तव

51 YEARS of Service to NATION

E.H. Dr. नरेन्द्र भूषण निगम

51 YEARS of Service to NATION

E.H. Dr. मो0 हाशिम इदरीसी
चेयरमैन

बी0 ई0 एच0 एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–208014 से प्रकाशित किया।